पूजा

सन्त-कवयित्री अक्कमहादेवी द्वारा रचित वचन

विस्तीर्ण आकाश में दृश्यमान सूर्यप्रकाश,
वायु की गति, वृक्षों, पौधों और लता-वेलियों पर अंकुरित षड्-वर्णों के नव-पल्लव व पुष्प—
यह सब दिन के समय में की जाने वाली पूजा है।
चन्द्रप्रकाश, नक्षत्रों, अग्नि और विद्युत की दीप्ति तथा इन्हीं के समान अन्य द्युतिमान चीज़ों की प्रभा,
रात्रि के समय में की जाने वाली पूजा है।
हे भगवान शिव, मल्लिका पुष्पों के समान मोह लेने वाले, हे चेन्नमल्लिकार्जुन,
अहर्निश आपकी पूजा में, मैं स्वयं को भूल जाती हूँ।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

अक्कमहादेवी, कर्नाटक की सन्त-कवयित्री

पॉल हॉकवुड द्वारा लिखित

अक्कमहादेवी दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में, बारहवीं शताब्दी में हुईं, भगवान की अनन्य भक्त थीं; वे शैव परम्परा से थीं। जनसाधारण की सरल कन्नड भाषा में वे भगवान शिव के प्रति अपने प्रेम का गुणगान करतीं।

अक्कमहादेवी की गहन आध्यात्मिकता के सम्मान में शैव सम्प्रदाय के सन्तों ने—जिनमें शामिल थे, पूजनीय बसवण्णा व अल्लम प्रभु—उन्हें 'अक्का' यह नाम दिया; 'अक्का' सम्बोधन का अर्थ है 'बड़ी बहन'। निस्सन्देह, अक्कमहादेवी के काव्य उनकी भक्ति के साथ-साथ भगवान के साथ एकाकार होने की उनकी गहरी उत्कण्ठा को भी अभिव्यक्त करते हैं। पूजाभाव से सराबोर व ललकभरे शब्दों द्वारा अपने काव्य में वे सीधे भगवान शिव के साथ वार्तालाप करती हैं, और अपने सीमित अस्तित्व को भगवान के साथ ऐक्य की स्थिति के प्रति समर्पित करने के अनुभव का वर्णन करती हैं। वे भगवान को अपना पति मानती थीं और उन राजस्थानी सन्त मीराबाई की ही तरह थीं जिन्होंने अक्कमहादेवी के समय के चार सौ वर्ष बाद अपने जीवन व आह्लादमय भजनों को भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित किया।

आज भी कर्नाटक में व सम्पूर्ण भारत में अक्कमहादेवी के काव्य व्यापक रूप से गाए जाते हैं। उन्होंने छन्दमुक्त शैली में अपने भक्तिमय काव्य की रचना की जिन्हें 'वचन' कहा जाता है। उनमें से लगभग तौन सौ 'वचन' आज उपलब्ध हैं जिनमें भगवान शिव के प्रति उनकी गहन भक्ति की अभिव्यक्ति है। जैसा कि वे उपर्युक्त 'वचन' में लिखती हैं :

> हे भगवान शिव, मल्लिका पुष्पों के समान मोह लेने वाले, हे चेन्नमल्लिकार्जुन,
> अहर्निश आपकी पूजा में, मैं स्वयं को भूल जाती हूँ।

उनके इस 'वचन' का अन्तिम पद, सरल है फिर भी अनन्य भक्ति से ओतप्रोत है। स्वयं एक कवि होने के नाते, मैं अक्कमहादेवी के तीव्र उत्कण्ठा भरे 'वचनों' से मन्त्रमुग्ध हो जाता हूँ; भगवान के प्रति उनके गहरे प्रेम को अभिव्यक्त करने वाले उनके शब्द, सीधा प्रभाव डालने वाले भी हैं और साथ ही उनमें कलात्मक शैली भी है। ये शब्द मुझे उस स्थिति की ओर आकृष्ट करते हैं जिसका वे वर्णन करती हैं—कि भगवान हमारे अपने हैं, हमारे प्रियतम हैं, वे हमारे मन व हृदय में सदैव विद्यमान हैं।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।